नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :04.01.2020

प्रकाशनार्थ – 2

समापन समारोह

(भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन)

को अहं से सो अहं तक की यात्रा ही जीवन संस्कृति है। ज्ञातव्य है कि जन्म के समय किसी भी संस्कृति का बच्चा को अहं शब्द का उच्चारण करता है। यह वक्तव्य अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय जी ने संगोष्ठी के समापन सत्र में व्यक्त किया। आपने बताया कि हमारे उपनिषदों में अनेक आख्यान प्रश्न के रूप में उपस्थित है। जिनके उत्तर निश्चित रूप से भारतीय सभ्यता के संवाहक प्रतीत होते हैं। उपनिषदों में कहा गया कि अध्ययन करने अथवा पर्वत चढ़ने का क्या लाभ है? इसका उत्तर देते हुए इसी उपनिषद में कहा गया कि विश्व की जानने की इच्छा के कारण ही जिज्ञासु दुर्गम पर्वतों को पार करते हैं। इस आख्यान से स्पष्ट है कि भारत में अनादिकाल से विश्व को जानने एवं वहाँ अपनी संस्कृति का प्रसार करने की अद्भुत अभिरूचि उपस्थित थी। परन्तु विडम्बना यह है कि सैकड़ों वर्षों तक वाह्य आक्रमण एवं शासकों के प्रभाव से आज हम अपने सांस्कृतिक विश्वास खो रहे हैं। विश्व में संस्कृत एवं मेधाओं का प्रसार पूर्व से हुआ। यही कारण है कि अधिकांश धर्म के लोग पूर्व की ओर मुंह कर अपना धार्मिक कर्म करते हैं।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ओमजी उपाध्याय ने बताया कि हजार वर्षों से भारतीय संस्कृति को दूषित किया गया। ब्रिटिश इतिहासकारों ने हमें बर्बर एवं असभ्य बताया क्योंकि वे लोग भारतीय मूल एवं सांस्कृतिक मूल्य को समझ नहीं पाये। यहाँ के लोग जहाँ भी गए वहाँ धर्म, संस्कृति, उद्योग एवं वस्त्र आदि का व्यापक प्रयोग एवं प्रसार किया। न केवल एशिया बल्कि पश्चिमी देशों में भी भारतीय संस्कृति का संचार हुआ।

मुख्य अतिथि डॉ. कुमार रत्नम, सदस्य सचिव भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ को भारतीय संस्कृति का संवाहक कहा। आपने बताया कि भारतीय परम्परा सूक्ष्म से स्थूल की ओर प्रसारित होने वाली संस्कृति है। यही कारण है कि हम भारतीय अपनी संवेदनाओं को सूक्तों से माध्यम से व्यक्त करते हैं। प्रस्तर काल में भी हमारे पूर्वजों ने गुफाओं में कला एवं आलेखन का अंकन कर अपनी सृजनात्मकता का अद्भुत नमूना प्रस्तुत किया। आपने यह भी स्पष्ट किया कि कुछ तथाकथित इतिहासकारों द्वारा भारत की विकृत्ति संस्कृति को प्रस्तत किया गया। अतः भारतीय साहित्य का अध्ययन के अभाव में यहाँ की सांस्कृतिक उपलब्धता का आंकलन करना गलत होगा।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हए प्रो. यू.पी. सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति को हिन्दू संस्कृति कहना भी गलत नहीं होगा। सभ्यता के ऊषा काल से ही भारत की संत परंपरा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति का प्रसार करने वाली रही है। वैदिक कालीन ऋषियों से लेकर अद्यतन सिद्ध गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों द्वारा भारत की इस सनातन परम्परा का निर्बाध रूप से निर्वहन किया जाता रहा है। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह एवं प्रतिवेदन डॉ. कन्हैया सिंह ने प्रस्तुत किया।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी